

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०३/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पित है।

सभी आत्माएं अपनी मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी देखें अपने मूलस्वरूप को... चमकता हुआ सितारा.. ब्रेन के अंदर, हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में मुझ आत्मा का सिंहासन है... सभी देखें, आप आत्मा आपके सिंहासन पर स्थित हो.. आप आत्मा से लाइट और माइट निकल रही है.. सभी अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखें... अपने मूलस्वरूप को गहराई से अनुभव करें... हर कोई अगले १५ सेकंड के लिए अपने मूलस्वरूप स्थिति को, अपनी लाइट को देखते रहिए...

क्या सभी ने अपने मूलस्वरूप स्थिति का, अपने लाइट का अनुभव किया? जितना-जितना आप बाहरी रूप से साइलेंस में आते जाओगे, उतना-उतना आप, आप आत्मा की मूलस्वरूप अवस्था को, जल्द से जल्द उस स्थिति में आते जाओगे। जितना-जितना आप बाहरी शोर से परे रह पाओगे, उतना ज्यादा आप आपके सत्य स्वरूप को अनुभव कर पाओगे। अगर आपको आपके आत्मिक शांति के लेवल पर उतरना है, तो आपको बाहरी शोर से दूर होना होगा। जितना-जितना आप बाहरी रूप से ज्यादा बातें करेंगे, चर्चाएं करेंगे — आपको अगर बहुत ज्यादा बात करने की आदत है, आपको अगर बात किए बिना रहा नहीं जाता — अगर यह आपने आपका संस्कार बनाया है, तो आपके लिए अति कठिन होगा आत्मिक लेवल की शांति में आने के लिए, उस शांति में उतरने के लिए।

अगर आप दिल से चाहते हो कि आप जल्द से जल्द उस मूलस्वरूप अवस्था को, जो आपकी रियल अवस्था है, मूल अवस्था है, उस अवस्था में सदैव सहज रूप से स्थित रह पाए — फिर वो चलते-फिरते हो, कर्मों में आते हो या बैठकर अभ्यास करते समय हो — पर अगर आप आत्मा दिल से

उस सहज अवस्था को पाना चाहती हो, तो सबसे पहले आपको जो बाहरी शोर पसंद है, बातें करना पसंद है, चर्चाएं करना पसंद है, इन सब का त्याग करना होगा; क्योंकि साइलेंस एक अलग ऊर्जा है और आवाज, शोर एक अलग ऊर्जा है। दोनों भी ऊर्जाएं एक साथ आपके अंदर नहीं ठहर सकतीं। या तो एक समय पे आप आवाज में रहोगे, या फिर एक समय में आप साइलेंस की अवस्था में रहोगे।

पर आपको अगर आपकी मूलस्वरूप स्थिति में आना है, वह भी जल्द से जल्द, तो कोशिश करें कम से कम, जितना आवश्यक है, उतना आवाज में आएँ। कम से कम आवाज के साधनों का उपयोग करें। जिनको सच में आत्मा की तपस्या करनी है, जिनको अपनी आत्मा का परिवर्तन करना है, वह आत्माएं कम से कम आवाज में आएँ और ज्यादा से ज्यादा अपना फोकस अपने मूलस्वरूप अभ्यास पर लगाएं। और जो भी आत्माएं संसार में अपने गृहस्थ व्यवहार में पार्ट बजा रही हैं, सभी आत्माएं ध्यान में रखना — बस आपके इस मौन के कारण किसी को दुख नहीं पहुंचाना। आप पहले जितनी बातें करते थे, आप चेक करना क्या उतनी सारी बातें करना आवश्यक है या वहां पर कम शब्दों में भी व्यवहार हो सकता है बिना किसी को दुख पहुंचाए।

पर साइलेंस ही एक ऐसी शक्ति है, जो आपको आपके मूलस्वरूप स्थिति में आने में मददगार बन सकती है। और सभी आत्माएं ध्यान में रखना — मौन सिर्फ बाहरी कर्मेन्द्रियों का, मुख का ना हो। मौन मन का हो, मौन बुद्धि का हो, मौन आपके अलग-अलग संस्कारों का हो। हर कोई सिर्फ बाहरी मुख का मौन, उस पर ही ध्यान ना दे। अगर मन अंदर चलता रहे, मुख भले मौन में है, तो उससे भी आप उस साइलेंस में नहीं जा पाओगे, जो आपको आपके मूलस्वरूप अवस्था में पहुंचाने में मददगार बनेगा।

सभी को सारे दिन में कॉन्ससियसली कम से कम एक घंटा मौन, मुख का मौन करना जरूरी है। यह बाहरी मौन आपको आपकी आंतरिक शांति में उतारने के लिए मददगार बन सकता है। जितनी बातें करना जरूरी है, उतनी बातें जरूर करें। पर जिन बातों का कोई अर्थ नहीं होता और जिन बातों से

आपका समय, ऊर्जा नष्ट होती है, ऐसी बातों में, ऐसे आवाज में आप आत्मा आपकी ऊर्जा और समय को बचाना।

हर किसी को चेक करना चाहिए कि आपको क्या सच में मुख का मौन अच्छा लगता है या आपको बातें करना अच्छा लगता है। हर कोई अपने से अवश्य चेक करे कि आपका इंटरेस्ट सच में किसमें है — बाहरी शोर में, बाहरी आवाज में है या आंतरिक शांति में उतरने में है। एक बार आप आत्मा आपके आंतरिक शांति में, साइलेंस में उतर गए, फिर बाहर कितना भी शोर हो, आवाज हो, उस शोर का, आवाज का आप आत्मा के ऊपर प्रभाव नहीं आएगा। पर उसके लिए आपको अभ्यास करना होगा। कुछ समय बाहरी रूप से मुख का मौन और आंतरिक रूप से मन, बुद्धि, संस्कार का मौन — सारे दिन भर में कम से कम एक घंटा इस मौन में रहने से आप आत्मा के अंदर आंतरिक शांति, आंतरिक साइलेंस इमर्ज होता जाएगा धीरे-धीरे। ऐसे नहीं एक दिन किया, दो दिन किया, फिर छोड़ दिया; फिर, फिर से कुछ दिनों के बाद मौन का अभ्यास किया। नहीं, अगर आपको सच में आपके अंदर परिवर्तन का, किसी भी बात का रिजल्ट चाहिए, तो उसके लिए वह अभ्यास हर दिन लगातार कम से कम २१ दिन से लेकर चार मास तक वह अभ्यास बिना चूके करना होगा। उसके बाद आप आपके अंदर वह परिवर्तन देख सकोगे। पर इन २१ दिन से लेकर चार मास की यात्रा में आप सावधान रहें; आपकी माया आपका इस अभ्यास में खंडन कर सकती है। इसलिए आपको दृढ़ता से यह अभ्यास लगातार चार मास तक हर दिन करना होगा।

कोई भी नया संस्कार आप आत्मा के अंदर पक्का धारण होने में, पूर्ण रूप से उसको धारणा में आने में समय लगता है। एक होता है उस अभ्यास की आदत, संस्कार में आना और एक होता है वह संस्कार ही बन जाना सदा के लिए। पर सदा का कोई भी संस्कार बनाने के लिए लंबे काल का, हर दिन का अभ्यास करना जरूरी है। किसी को कोई भाषा सीखनी है, तो उसको उस भाषा का अभ्यास, उस भाषा में बात करना, उस भाषा में लिखना या पढ़ना — यह अभ्यास लगातार करना होता है, फिर जाके उसके संस्कारों में वह अंदर उतरना शुरू होगा। फिर भी वह अभ्यास उसको लगातार कंटिन्यू

रखना होता है, जब तक उसका वह अनकॉन्ससियसली संस्कार सदा का ना बने। उसको किसी ने नींद में भी जगाकर, उठाकर उस भाषा में कुछ पूछे, नींद में भी उस भाषा में वह जवाब दे सके। यह हुआ पूर्ण रूप से वह संस्कार उसके अंदर धारणा में आना। उस ही प्रकार से सदाकाल का आत्मा के अंदर कोई संस्कार धारण करना है, उसके लिए आपको उसका अभ्यास करना जरूरी है। आप आत्मा अगर चाहते हो आपके अंदर शांति का संस्कार, आपके धारणा में आए — एक है आत्मा के अंदर जो शांति का गुण है, उस शांति के गुण से उस शांति के गुण को चार्ज करके उस शांति की ऊर्जा आपके अंदर बढ़ाना; और एक है उस शांति की ऊर्जा आपके सभी कर्मेन्द्रियों में धारणा में उतरना। उसके लिए पहले आपको बाहरी रूप से कॉन्ससियसली शांति में, साइलेंस में बैठने का अभ्यास करना होगा। जब-जब आप समय निकालके मुख का मौन कर पाएंगे, मन का मौन कर पाएंगे, अपने आप आप आत्मा की शांति की, शक्ति की जागृति होना शुरू हो जाएगी। आपके अंदर की साइलेंस की शक्ति जागृत होना शुरू हो जाएगी। पर उसके लिए कॉन्ससियसली बैठकर आपको अभ्यास करना होगा।

एक है विपरीत गुणों को दिल से संकल्प उठाकर त्याग करना और दूसरा है कॉन्ससियसली अभ्यास करके अपने अंदर सद्गुणों को धारण करना। सद्गुण संस्कारों में उतरने में समय लगता है; क्योंकि संस्कारों में इतने जन्मों के विपरीत गुणों के संस्कारों की ऊर्जा पड़ी है। इसलिए सद्गुणों की ऊर्जा को धारण करने में समय लगेगा, पर उसे छोड़ना नहीं। जितना-जितना आप, आपको जो भी सद्गुण आप आत्मा के अंदर, आप आत्मा के संस्कार के अंदर धारणा में लाना चाहते हो, उतना-उतना उस सद्गुण के बारे में आपको चिंतन करना होगा कॉन्ससियसली बैठकर। देखना होगा कि कहां-कहां पर यह सद्गुण मेरे अंदर उतरना चाहिए। क्या मेरे विचारों में शांति होती है? क्या मेरे संकल्पों में शांति होती है? क्या मेरे स्वभाव-संस्कार में शांति होती है? क्या मेरे व्यवहार में शांति होती है? क्या मेरे कर्मों में शांति होती है? इस प्रकार का खुद से बैठकर आपको चिंतन करना होगा। जितना-जितना आप सद्गुणों के बारे में चिंतन करते जाएंगे, उतना-उतना वो आपके धारणा में, संस्कारों में उतरते जाएंगे; क्योंकि जिस गुण का आप चिंतन करते हो मन के द्वारा या बुद्धि के द्वारा आप देखते हो कि आपका

व्यवहार इस गुण से, इस सद्गुण से भरा हुआ दिख रहा है, तो जितना-जितना आप जिस गुण के चिंतन में रहते हो, उतना-उतना उस गुण की ऊर्जा आप आत्मा के अंदर आ जाती है। आप यह नहीं कह सकते कि "मुझे शांति चाहिए, मुझे सुख चाहिए, मुझे प्रेम चाहिए या मुझे शक्ति चाहिए"। आप चेक करो, आप आपके चिंतन में लाओ कि क्या यह सारे सद्गुण, जो ऑलरेडी मुझ आत्मा के अंदर यह सभी गुणों की शक्तियों के रूप में वह सभी उपस्थित हैं, फिर भी हम आत्मा इनकी डिमांड बाहरी रूप से क्यों कर रहे हैं? क्यों यह हमारे सारे अंदर के गुण-शक्तियां जागृत नहीं हैं? आप जिसका चिंतन करेंगे, उसकी ऊर्जा बढ़ती जाएगी। वह ऊर्जा आप आत्मा के अंदर, सभी गुण-शक्तियों के अंदर, सभी दिव्य गुणों के अंदर, सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों के अंदर, उन-उन सद्गुणों की ऊर्जा भर्ती जाएगी और वह सद्गुण कर्मों में आते जाएंगे। पर आपको कॉन्ससियसली उसके ऊपर चिंतन करना होगा कि क्या मेरा सभी के साथ प्रेम भरा व्यवहार रहता है? क्या मेरे मन में सभी के प्रति स्नेह रहता है? क्या मेरे व्यवहार में वह स्नेह दिखता है?

भल इस मोमेंट में आपके मन, बुद्धि, संस्कार या स्थूल कर्मेन्द्रियों में, आपके व्यवहार में कहा पर भी वह गुण आपको अभी नहीं दिख रहा होगा या आपके संबंध-संपर्क वालों को नहीं दिख रहा होगा, पर अगर आप रोज उस गुण का चिंतन करते जाएंगे, अपने आप वह सद्गुण धारणा के रूप में आपके संस्कारों में उतरता जाएगा और वही आपके कर्मेन्द्रियों के द्वारा प्रकट होता जाएगा कर्मों में, और वही आपके संबंध-संपर्क वालों को दिखता जाएगा; और यही हुआ आपका उस गुण को लेकर आप आत्मा के अंदर परिवर्तन। कुछ कठिन बात नहीं है। अगर किसी को भी कोई सद्गुण अपने धारणा में उतारना है तो, बस चिंतन करें। चिंतन करने से ही धारणा में उतरता जाएगा।

तो हर कोई चेक करे — सबसे पहले आज का होमवर्क कि क्या आप सच में आपके मूलस्वरूप अवस्था में आना चाहते हो? क्या उसके लिए आप बाहरी आवाज का, बाहरी शोर का त्याग करने के लिए तैयार हो? और क्या आप कॉन्ससियसली बैठकर रोज मौन का अभ्यास करने के लिए, दिल से करने के लिए तैयार हो? जिसे परिवर्तन होना है, वह दिल से अभ्यास करेगा। तो हर कोई आज

के दिन में अपनी चेकिंग अवश्य करें कि आपको सच में आपके परिवर्तन के लिए साइलेंस में रहना, जितना जरूरी है उतनी ही बातें करना अच्छा लगता है या मायावी बातें करने में आपको आनंद आता है। जो आपका इंटरेस्ट होगा, वहां पर आप आत्मा की ऊर्जा लगेगी। यह सब आप आत्मा के ही हाथ में है, आपकी ऊर्जा को आपको कहां लगाना है।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी का कल्याण हो।